

कद्, कम्, कव, का, कु. — Das interr. in Verbindung mit verschiedenen Partikeln: a) mit इव (vgl. u. इव 3): किमिवैष अमूत् ऋत. Br. 11, 4, 1, 3. — b) mit उ (vgl. u. उ 2, 3, c und 7): क उ तस्मै मनुष्यो यः ऋत. Br. 5, 2, 3, 10, 4, 1, 3. क उ अयत् RV. 4, 43, 1. किमु अमूत् आ. Br. 7, 13. — c) mit नाम wohl: सिद्धं बोधयति को नाम पाण्ड. I, 351. II, 166, 165, 6. ad Çāk. 94. Kathās. 4, 133, 16, 9. Prab. 13, 16, 29, 13, 33, 17. किमिव नामायुष्मानमरे श्वरान्नाहति Çāk. 97, 15. — d) mit der Fragepartikel नु RV. 1, 165, 13, 8, 45, 37. को न्वयम् ऋत. Br. 13, 4, 1, 15, 14, 6, 34. किं नु मत्तं किर्मानम् आ. Br. 7, 13. क उ नु ते मर्कित्तमनः समस्यास्मत्पूर्व ऋषयो ऽर्त्तमापुः RV. 10, 34, 3. कद् न्वर्स्याकृतम् 8, 35, 9. को न्वस्मिन्संप्रतं लोके गुणावाञ्छश्च वीर्यवान् R. 1, 1, 2. को न्वेतल्लोके ऽस्मिन्प्रथयेत् 4, 1. किं न्विदमुच्यते (वनम्) wie heisst dieser (Wald)? 26, 15. किं नु कार्यं कृतस्येह मम 2, 73, 2, 5, 13, 2, 3. कं नु पृच्छामि N. 12, 20. को नु मे ऽीविते नार्थः 65. को नु खल्वेष निषिध्यते Çāk. 101, 19, 20, 33, 2. किं नु खलु स्यात् 71, 20. — e) mit वा wohl ऋत. Br. 13, 3, 3, 6. किं ते हिडिम्ब एतैर्वा मुखमुतैः प्रबोधितैः Hip. 4, 2. परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न ज्ञायते Bhartr. 2, 24. Megh. 35. Çrṅgārat. 4. दहतु मदनः किं वा मृत्योः परेषां विधास्यति Sāh. D. 33, 13. कचम् — पुनर्विपितुं को वा दैवान्यः प्रगल्भते Rīgā-Tar. 2, 96. Vgl. u. 3, d. — f) mit स्वद्: कः स्विद्वृत्तो निष्ठितः RV. 1, 182, 7. कं स्विद्वृत्तम् 164, 17, 8, 33, 8. किं स्विद्वृत्तस्योष्ठानम् 10, 81, 2. कः स्वित् क उ स्वित् किं स्विद्वेषतम् VS. 23, 9. ऋत. Br. 14, 2, 3, 12. किं स्वित्स्वप्रद्व निमिपति किं स्विद्वज्ञातं न चोपति । कस्य स्विद्वद्वयं नास्ति किं स्विद्वेगेन वर्धते ॥ MBh. 3, 10648. 13, 295. Çāk. 110. किं स्वित् was mag das sein? R. 2, 63, 11. किं नु स्विदेतत्पतति was mag da wohl fallen? MBh. 1, 3571. तत्रेकं क उपासीरन्क उ स्विद्वनुशरेते Buāg. P. 3, 7, 37. — 2) indef. irgendwer, Jemand, irgendwelcher; meist in negat. Sätzen: मा कस्यं पत्तं सद्मिदुरो गोः RV. 4, 3, 13, 5, 70, 4. मा कस्मै धातम्भ्यमित्रीणो नः 1, 120, 8. मा कस्यं नो अरुह्यो धूर्तिः प्र णश्चर्त्यस्य 7, 94, 8. न हि शशकविषाणां को ऽपि कस्मै ददाति Bhartr. 3, 99. न कस्य को वल्लभः पाण्ड. II, 102. नान्यो ज्ञानाति कः Kathās. 1, 56. विषाकः कर्मणां प्रेत्य केषांचिदहं ज्ञायते । इह चामुत्र वै केषाम् (für Einige) Jāg. 3, 133. कथं स पुरुषः पार्थ कं धातयति कृत्ति कम् Bhāg. 2, 21. — 3) zum eigentlichen indef. wird das interrog. durch seine Verbindung mit den Partikeln च, चन (च न), चिद्, वा, अपि; davor erscheint häufig noch das relat. य. a) mit च (auch) irgend wer oder welcher, pl. etwelche: अन्वोश्च दत्तवक्त्रादीनवधीत्काश्च धातयत् Buāg. P. 3, 3, 11. न च केन च (v. l. चिद्) धर्मेण विरुध्यते प्रजा इमाः MBh. in Lassen, Pent. 68, 48. 71, 80 (v. l. के च न st. केन च). Sehr häufig, namentlich in der älteren Sprache, mit vorang. relat. wer oder welcher immer; Jedermann, jeglich; bald relat. indef., bald reines indef.: ये के च प्रतिशत्रवस्ते AV. 4, 22, 6, 5, 13, 9, 23, 5. यो वै कश्च क्षियते स शवः ऋत. Br. 13, 8, 1, 14, 4, 1, 21. एतर्हि य एव कश्च ब्रह्मा भवति 12, 6, 1, 41. यत्किं च पृथिव्यामार्धं RV. 5, 83, 9. याः काश्च वीरुधः AV. 11, 4, 17, 7, 70, 3, 76, 3. VS. 13, 6. यस्मिन्कस्मिंश्च ज्ञायते AV. 12, 4, 14. यस्यै कस्यै च देवतायै ऋत. Br. 1, 6, 3, 19. तस्माद्यस्मात्कस्माच्चाङ्गात्प्राण उत्क्रामति Bh. Ār. Up. 1, 3, 19. तस्माद्यया कया च विधया वद्वन्नं प्राप्नुयात् Taitt. Up. 3, 10, 1. या वेदवाह्याः स्मृतयो याश्च काश्च कुदष्टयः । सर्वास्ता निष्फलाः M. 12, 95. यानि कानि च मित्राणि कर्तव्यानि शतानि च ad Hir. 17, 3. यत्किं च Buāg. P. 2, 6, 44. — b) mit चर्न (च auch

+ न nicht) auch Niemand, auch Nichts, auch nicht ein: अदृष्टाः किं चनेह वैः RV. 1, 191, 7. यस्मादिन्द्राद्दकृतः किं चनेमृते 2, 16, 2. स विधमन्महो सर्वांश्चचिदासाय किं च न N. 13, 15. Sehr häufig in einem Satze mit einer zweiten negat. Partikel, wodurch die Negation nicht etwa aufgehoben, sondern nur verstärkt wird: मामीपां कं चनेच्छिष्यः RV. 6, 73, 16, 2, 16, 3. नातिं पश्यति कश्चन AV. 4, 3, 2. VS. 23, 18. यस्माच्चातं न पुरा किं चनेव 32, 3. AV. 4, 23, 2, 11, 4, 25. न किं चन ऋत. Br. 2, 4, 1, 14, 14, 3, 5, 18. न पुत्रयोरेष किं चन er geht Euch gar Nichts an 1, 6, 3, 13, 14, 6, 3, 1. — 10, 6, 5, 1. 14, 5, 1, 21. न हीदृशमनायुष्यं लोके किं च न विद्यते M. 4, 134, 3, 47, 6, 47, 8, 189, 351, 9, 26, 11, 261. N. 7, 9, 20, 6, 21, 20. Vigv. 7, 20. मा किं च न पुत्रः Buāg. P. 1, 13, 39. In solcher Stellung geht das Gefühl für die in चन enthaltene Negation allmählich verloren und man beginnt die Verbindung in dem Sinne von wer oder was es auch sei, irgend ein aufzufassen: तदा कश्चन हि प्रकृतः RV. 3, 30, 1. सवितुः कश्चन प्रियम् 5, 82, 2. यत्रान्विद्वेद्वा ऽपीति प्रणुयाद्वापि किंचन M. 8, 76. यदि वः प्रतिब्रूयाद्वि कश्चन N. 17, 40. Ragh. 12, 49. Buāg. P. 1, 5, 14. केचन Einige 5, 23, 4. राशीकृतान् प्रुष्यमाणान्यान्काश्चन काश्चन etwelche, verschiedene R. 2, 96, 34. Wie कश्च in Verbindung mit dem relat.: अहं चैव हि यच्चान्यन्ममास्ति वसु किंचन । तत्सर्वं तव N. 4, 2, 9, 1, 26, 5. प्रत्युवाच ततः साधी — सार्थवाहं च सार्थं च जना ये तत्र केचन 12, 91. तत्सर्वं नः समाचक्ष्व पृष्टे यदिह किंचन Buāg. P. 1, 4, 13. Als bequemer Ausgang eines Halbverses ist die Verbindung des interr. mit चन sehr beliebt. In den Beispielen aus der klassischen Literatur schreiben wir च न bald getrennt, bald verbunden, je nachdem die Negation ihre ursprüngliche Bedeutung bewahrt oder verloren hat. किंचन verbindet sich mit dem neg. अ (s. अ किंचन) und mit निस् (निष्किंचन Buāg. P. 2, 9, 6, 3, 28) zu einem adj. comp. in der Bed. Nichts besitzend. — c) mit चिद् wer, was oder welcher immer; irgend ein, ein, Jemand, Etwas: मा हिंसिष्ट पितरः केन चित्तः RV. 10, 13, 6. यदस्याः कस्मै चिद्वेगोय वालान्कश्चित्प्रकृतार्ति AV. 12, 4, 7, 6, 20, 1. अन्यस्तेषां परिधिरेस्तु कश्चित् RV. 1, 125, 7. पतनासु कामु चित् 129, 2. प्रणेतारः कस्यं चिद्वतायोः 169, 5. यच्चक्रामा काञ्चिद्दगः 183, 8, 2, 42, 1, 3, 45, 1. यते काश्चिद्ववतीत् ऋत. Br. 14, 6, 10, 1, 12, 6, 1, 6, 13, 8, 3, 4. कां चिन्मायो कुर्यात् 4, 3, 11. काश्चिद्द्वारः काथोप. 4, 1. — धर्मार्थं येन दत्तं स्यात्कस्मैचिद्याचते धनम् M. 8, 212. यदि स्त्री यथ्वरजः श्रेयः किंचित्समाचरेत् 2, 223. कस्मैचिदस्मै नमः Verehrung ihm, wer er auch sei, Sāh. D. 7, 12. प्रार्थयेद्यदि मां काश्चित् N. 13, 43. तत्र प्रुष्याव शब्दं वै मध्ये भूतस्य कस्यचित् 14, 2. सर्वां कांचिद्वपेतुः 10, 4. केनचिद्व्येन 13, 13. कस्मिंश्चित्कारणात्तरं 13, 34. Çāk. 64, 11, 106. Vid. 18, 163, 187. यथान्यः पुरुषः काश्चित्पलाशैर्मोक्षितो भवेत् Daç. 1, 12, R. 1, 8, 8. ततो ऽपरस्मिन्संप्राप्ते काले कस्मिंश्चिदेव तु MBh. 1, 1664. किंचिद्दामात्तरं गतः पाण्ड. 169, 7. कांचित्कालम् einige Zeit hindurch R. 3, 21, 31. केनचित्कालेन Vigv. 5, 13. कस्यचित्कालस्य Çāk. 110, 15. der Eine oder der Andere im Gegens. zu viele oder alle: मनुष्याणां सक्षत्रेषु कश्चिद्यतते सिद्धये । यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेति तत्त्वतः ॥ Bhāg. 7, 4. परापदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम् । धर्मे स्वयमनुष्ठानं कस्यचित्तु म्हात्मनः ॥ Hir. I, 98. कश्चित् देशं परिव्रजेत् solche Gegend vermeide Jedermann Kān. 37. केचित् etwelche, einige M. 3, 53. Brāhman. 1, 17, R. 5, 91, 18. पाण्ड. 120, 4. Çāk. 27, 1. पदानि गणायन्गच्छ स्वानि नैषध का-